

TOI PAGE 2

HINDUSTAN PAGE 6

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

# LU mourns demise of its brilliant and cheerful botanist

TIMES NEWS NETWORK

**Lucknow:** Well-known biologist and former head of Lucknow University's botany department, Prof Dinesh Kumar, became the latest victim of Covid-19 when he succumbed to the virus on Sunday morning. Prof Kumar, 73, had been admitted to a Noida hospital after testing positive a few days ago. He had retired from LU in 2010 and was living in the NCR since then with his son.

Apart from being the botany department's head, Prof Kumar also served as the director of Institute of Mass Communication in Science and Technology at the university. He did his MSc from Lucknow University in 1969 and PhD in 1974 before joining the Panjab University. He came back to his alma mater as a teacher in 1977 and taught in LU for 33 years till his retirement in 2010.

A devoted academic, he supervised 24 PhDs and published over 50 research papers in international journals. "Apart from being a brilliant botanist, he was a cheerful person, full of positive vibes," recalled former head and zoology faculty (ret'd) Prof AK Sharma.



Professor Dinesh Kumar

Prof Kumar is survived by his wife and two sons, who are based in Noida and Gurgaon.

LU teachers mourned the demise of Prof Dinesh who also served as the general secretary of Lucknow University Retired Teachers' Association and held the various administrative posts in the university.

"He was an extremely lively person and a dedicated academician. In the year 2006, he was the proctor when a group of rowdy students had attacked his residence but he didn't give up and continued with his administrative role," said Prof Sharma.

Prof Vineet Verma, general secretary of LU Teachers' Association, said, "We have lost a brilliant academician, a good administrator and the finest human being. A condolence meeting will be held at LU on Monday morning."

## दिल्ली की भीड़ में खोने से बेहतर एलयू में पहचान बनाना ...



सैनिक स्कूल तिलैया कोडरमा अब झारखण्ड में है। यहां से बाहरवी की पढ़ाई की। पहले सोचा दिल्ली निकलते हैं। लेकिन, हमारे एक शिक्षक लखनऊ से थे। उन्होंने राय दी, दिल्ली की भीड़ में खोने से बेहतर लखनऊ और लखनऊ विश्वविद्यालय में पहचान बनाना है। उनकी राय पर 1984 में लखनऊ निकल आया। यहां बीए ऑनर्स में दाखिले लिया। सुरेन्द्र सिंह सर तब एनडी छात्रावास के वार्डन हुआ करते थे।

फर्स्ट डिवीजन होने के कारण तुरंत कमरा भी मिल गया। बहुत उत्साह था। सारी फीस जमा हो गई। किताबें खरीद ली। लेकिन, अचानक झटका लग गया। असल में, उस साल विज्ञान कांग्रेस होनी थी। तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को लखनऊ विश्वविद्यालय आना था। अचानक छात्रावास खाली करा लिए गए। मेस में खाना बनाने वाले चले गए। पैसा पहले ही खत्म हो गया था। कई दोस्त भी नहीं बना था, जिससे पैसे मांगते। कहते हैं न, हनुमान जी लखनऊ विश्वविद्यालय में सब संभाल लेते थे। ऐसा ही मेरे साथ हुआ। एक पुरानी पहचान वाले व्यक्ति अचानक मिल गए। उन्होंने मदद की।



प्रो. कमल कुमार

पढ़ाई में पहले से ठीक था। बीए ऑनर्स में गोल्ड मैडलिस्ट रहा। उस दौर की एक खास बात थी। चाहें छात्र नेता हो या कोई शिक्षक सभी का पढ़ाई करने वाले छात्रों को पूरा सहयोग मिलता था। उस समय तो छात्र राजनीति भी जोरों पर थी। लेकिन, छात्रावास में जिस कमरे में रहते, उसके आसपास भी कोई शोर खराबा नहीं होता था। 1987-88 में राजनीति शास्त्र में ही स्पेशल एमए किया। कुछ समय के लिए केकेसी में पढ़ाने का मौका मिला। तब लखनऊ विश्वविद्यालय में पीएचडी चल रही थी। दो महीने लखनऊ विश्वविद्यालय में निशुल्क पढ़ाने का मौका मिला। उसके बाद तत्कालीन कुलपति डॉ. हरिकृष्ण अवस्थी कहा कि निशुल्क क्यों पढ़ाएंगे। तब पार्टटाइमर के रूप में विश्वविद्यालय से जुड़ने का मौका मिला। अंदाजा भी नहीं था कि लखनऊ विश्वविद्यालय से जुड़कर काम करने का मौका मिलेगा। कहते हैं यहां हनुमान जी सबकी सुनते हैं। आज मैं जो भी हूँ, सिर्फ इसी विश्वविद्यालय की वजह से हूँ।

- प्रो. कमल कुमार, राजनीति शास्त्र

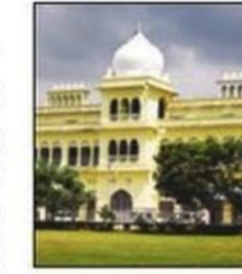
## कोरोना प्रभाव : एलयू में इस साल 25% अधिक दाखिले

स्नातक स्तर पर 4245 दाखिले हुए, पिछले साल 3400 ही थी संख्या

माई सिटी रिपोर्टर

**लखनऊ।** कोरोना और लॉकडाउन लखनऊ विश्वविद्यालय के लिए सकारात्मक बदलाव लेकर आया है। लखनऊ में स्नातक स्तर पर बीते साल के मुकाबले करीब 25 फीसदी अधिक दाखिले हुए हैं। लखनऊ में इस साल स्नातक स्तर पर 4245 दाखिले हुए हैं। जबकि बीते साल इनकी संख्या सिर्फ 3400 ही थी। लखनऊ इसको अपनी ब्रांड वैल्यू के रूप में देख रहा है।

हालांकि हकीकत यह भी है कि पिछले साल तक कई कोर्स में सीटें भरने के लिए विवि को खासी मशक्कत करनी पड़ती थी। विशेषज्ञ इसकी वजह इस साल विद्यार्थियों का बाहर न जाना बता रहे हैं। उनके अनुसार कोरोना की वजह से इस साल अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ने के लिए बाहर भेजने से बच रहे हैं। लखनऊ से आमतौर पर काफी संख्या में विद्यार्थी दिल्ली जाते हैं। वहीं दूसरी ओर लखनऊ में भी पूर्वी जिलों के काफी विद्यार्थी पढ़ाई के लिए आते हैं। इस साल बाहर के जनपदों के विद्यार्थी तो लखनऊ आए हैं, पर यहां से बाहर जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या काफी कम रही। यही वजह है कि लखनऊ में इस साल दाखिले का आंकड़ा बढ़ गया।



केंद्रीकृत दाखिले से आया बदलाव

लखनऊ विश्वविद्यालय ने इस साल केंद्रीकृत दाखिला प्रणाली शुरू की है। इसके तहत लखनऊ ने एक ही आवेदन फॉर्म पर परिसर के साथ ही 56 महाविद्यालयों में भी दाखिले किए हैं। इससे विद्यार्थियों को फायदा हुआ है। विकल्प और मेरिट के आधार पर विद्यार्थियों को परिसर में ही आवंटन मिल गया। इसकी वजह से भी लखनऊ में इस साल दाखिले में बढ़ोतरी हो गई।

**स्नातक में छूटे अभ्यर्थियों को फीस जमा करने का मौका आज तक**  
लखनऊ विवि में स्नातक स्तर पर चयन होने के बावजूद दाखिला लेने से चूक गए चयनित अभ्यर्थियों के पास दाखिले का मौका सोमवार तक होगा। अभ्यर्थियों को लखनऊ के पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन फीस जमा करनी है। इसके बाद दाखिले बन्द हो जाएंगे।

**लखनऊ की ब्रांडिंग का असर**  
लखनऊ विश्वविद्यालय ने इस साल अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे किए हैं। ऐसा करने वाला यह देश का दसवां विवि है। कुलपति के प्रयासों से पिछले कुछ समय से लखनऊ ने खुद को एक ब्रांड के रूप में स्थापित किया है। शताब्दी समारोह के दौरान लखनऊ की इमेज और अधिक निखरकर सामने आई है। इस साल दाखिले ज्यादा होने की सबसे बड़ी वजह यही है। - डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता लखनऊ

**35 फीसदी तक बढ़ेगा आंकड़ा**  
लखनऊ में यह आंकड़ा सिर्फ स्नातक पाठ्यक्रमों का ही है। परास्नातक और पीएचडी पाठ्यक्रमों को शामिल करने पर यह आंकड़ा 35 फीसदी तक बढ़ जाएगा। ऐसे समय में जब सरकारी संस्थानों में दाखिले का आंकड़ा कम हो रहा है, लखनऊ में दाखिले बढ़ना अच्छी खबर है। पिछले कुछ समय में हम अपनी उपलब्धियों को बता पाए हैं, यह इसकी सबसे बड़ी वजह है। - प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति लखनऊ